विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2567, चैत्र पूर्णिमा, 23 अप्रैल, 2024, वर्ष 53, अंक 11

वार्षिक शुल्क रु. 100/- मात्र (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

अनेक भाषाओं में पत्रिका नेट पर देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

करणीयमत्थकुसलेन, यं तं सन्तं पदं अभिसमेच्च।
सक्को उजू च सुहुजू च, सुवचो चस्स मुदु अनतिमानी॥

खु.नि. सुत्तनिपातपाळि, 8/143 मेत्तसुत्तं

जिसे सचमुच अपना अर्थ सिद्ध करना है (अपना कल्याण साधना है), परम शांति-पद (निर्वाण) प्राप्त करना है, उसे चाहिए कि वह इसके योग्य बने! वह सरल बने. अति सरल बने, सुभाषी बने, मृदु (-स्वभाव) बने, निरभिमानी बने।

जन्म-शताब्दी समापन समारोह कार्यक्रम में विचार-मंथन एवं संकल्प

क्रमशः दूसरा भाग—

रविवार, 4 फरवरी 2024

आज का यह विशेष कार्यक्रम पूज्य गुरुजी के धर्म-कार्यों पर एक दृष्टि डालने के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों में आगे क्या काम करना है— उसे भी देखने-समझने के लिए है। तदर्थ हमारा कर्त्तव्य है कि भगवान बुद्ध से चली आ रही गुरु-शिष्य परंपरा ने बुद्ध शासन को सुरक्षित रखने, उसे दीर्घायु बनाने, उससे स्वयं लाभान्वित होने एवं लोगों की सेवा करने के लिए जिस प्रकार से काम किया, हम भी उसी प्रकार धर्म-सेवा करते रहें। बुद्ध शासन को लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए इन पांच बातों पर ध्यान देना होता है— अधिगम अर्थात साधकों का धर्म-पथ पर पूर्णतया प्रतिष्ठित होना (मार्ग-फल प्राप्ति तक), **पटिपत्ति**- विपश्यना का निरंतर अभ्यास करते रहना। **परियत्ति**- अर्थात भगवान बुद्ध के उपदेशों का अध्ययन करते रहना। भगवान की शिक्षा से जुड़े चिह्नों— जैसे विहार, साधना केंद्र, भिक्षु इत्यादि का होना। **धातु**— अर्थात भगवान की शरीर धातु का सुरक्षित रहना/रखना।

जब सयाजी ऊ बा खिन ने पूज्य गुरुजी श्री सत्य नारायण गोयन्काजी को पूर्ण आचार्य बनाकर भारत में विपश्यना सिखाने का काम सौंपा तो गुरुजी अपनी सूझबूझ, अपनी प्रज्ञा-पारमी आदि से एक-एक करके सभी क्षेत्रों में धर्मकार्य करते गए। अधिगम तो साधक की शुद्ध साधना, धर्म की समझ और उसकी पारमिताओं पर निर्भर करता है। इसीलिए भगवान ने कहा, **"कालं आगमेय्य"**— समय आने दो। पर उसके लिए परियत्ति और पटिपत्ति का शुद्ध रूप में कायम रहना भी आवश्यक है। अतः पहले तो गुरुजी ने विपश्यना साधना की शुद्ध विधि लोगों में बांटी। धीरे-धीरे साधक और धर्म-सेवक बड़ी संख्या में जुड़ते चले गए और धर्म के शुद्ध वातावरण की स्थापना के लिए केंद्रों का निर्माण भी होने लगा।

इसे पूज्य गुरुजी के ही शब्दों में समझते हैं:—

"लगभग 20 वर्ष पहले मेरे धर्म-पिता सयाजी ऊ बा खिन ने एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी मेरे कंधों पर डाली। इस लंबी धर्मचारिका का जब सिंहावलोकन करता हूं, यानी, पीछे मुड़ कर देखता हूं तो आश्चर्य होता है कि यह सब कैसे हुआ? फिर बात समझ में आती है कि सचमुच काम तो धर्म ही करता है। व्यक्ति की क्या महत्ता है? मेरे जैसा व्यक्ति जिसे करोड़ों की संख्या वाले इस देश में कुछ गिनती के लोग ही जानते हों, फिर भी किस प्रकार लोगों का सहयोग मिलता चला गया। सबसे बड़ा सहयोग तो परिवार वालों का ही मिला। उनका सहयोग न होता तो धर्म-पिता की हजार धर्म कामना होते हुए भी साहस ही नहीं कर पाता कि इतना बड़ा काम शुरू कर सकूं। लेकिन जैसे ही काम शुरू हुआ तो देखा कि किस प्रकार जाने-अनजाने लोग खिंचे चले आ रहे हैं। केवल शिविरों में भाग लेने के लिए ही नहीं, हर प्रकार से सहायता करने के लिए भी। और उन दिनों के शिविर— जबकि सारी सुविधा बेचारे व्यवस्थापक को किस कदर जुटानी पड़ती थी। कहीं कोई भाड़े का स्थान, कहीं कोई सार्वजनिक स्थान। बर्तन-भांडे इकट्ठे करना। शिविर में आने वालों की बुकिंग करना, आ गए तो उनकी बारातियों जैसी देखभाल करना। बड़ा आश्चर्य होता था उनकी इस कदर की सेवा देख कर।

ये प्रारंभिक बातें हैं। जब काम सफलता की ओर बढ़ना शुरू हो जाता है तो बात दूसरी होती है। प्रारंभ में तो बड़ी कठिनाइयां थीं। उन कठिनाइयों के दिनों में किस प्रकार अपनी घर गृहस्थी की जिम्मेदारियों, व्यापार-धंधे की जिम्मेदारियों आदि को एक ओर रखकर, शिविर की व्यवस्था करना और इतनी मैत्री के साथ इन आए हुए साधक-साधिकाओं की सेवा करना। उसी प्रकार यथाशक्ति उनकी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति करना, 10 दिन का शिविर समाप्त हुआ तो जहां-जहां से बर्तन-भांडे आदि लाए थे, उन्हें वापस पहुँचाना। जो लोग आए उनकी टिकटें बुक करवा कर उनके वापस लौटने की व्यवस्था करना। आश्चर्य होता है कि कैसे इन अपरिचित लोगों ने इतना बड़ा काम किया। यह सब कैसे हुआ? और स्थान-स्थान पर, ऐसी जगहों पर व्यवस्था करना जो अनुकूल नहीं हो तो भी बेचारे व्यवस्थापक किस प्रकार दिन-रात एक करके, कितने श्रम और सेवाभाव के साथ काम में जुट जाते थे। और इस प्रकार काम बढ़ता चला गया, बढ़ता चला गया।

धीरे-धीरे धर्म के स्थायी केंद्र बनते चले गए, यहां भी, बाहर भी। कहने को तो आसान है कि धर्म का स्थान बन गया तो व्यवस्था वालों को उतनी कठिनाई नहीं कि जगह ढूंढ़ो, उसके लिए आवश्यक सामान ढूंढ़ो, लेकिन अब कितनी सारी अन्य जिम्मेदारियां सिर पर आ पड़ीं। इतने बड़े स्थान की व्यवस्था कैसे करो। यहां यह आवश्यकता है, वहां वह..., नए निर्माण हो रहे हैं, इनके लिए समय दो, पुरानों में जो टूट-फूट है उसके लिए समय दो। अरे! कितना काम होता है। और फिर जिन-जिन लोगों

को लगा दिया कि तुम्हें प्रशिक्षण में साथ देना है, सहायता करनी है तो कितने निःस्वार्थ भाव से और कितने प्यार से लग गए। अरे! सबके सिर पर अपनी-अपनी जिम्मेदारियां हैं, सभी गृहस्थ हैं, अपने परिवार के लोगों के भरण-पोषण की जिम्मेदारियां हैं। काम-धंधे की जिम्मेदारियां हैं, फिरभी कैसे लग गए? शिविर पर शिविर लगाए जा रहे हैं। ऐसे धर्म स्थानों पर आकर के शिविर लगाएं तो कठिनाइयां कम, लेकिन जिनको ऐसी जगहों पर शिविर लगाने पड़ते हैं— मैं स्वयं 8-10 वर्षों तक गुजरा हूं इस स्थिति में से, जहां शिविर लगाने में सिखाने वाले को कितनी बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। अरे, व्यवस्थापकों को तो करना ही पड़ता है...। खूब समझता हूं कि ये बेचारे कितनी असुविधाओं में से गुजर कर भी कितना काम करते हैं। ये व्यवस्था करने वाले ही नहीं, धर्मसेवा करने वाले भी कितना काम करते हैं। इन्हें देख कर एक सुखद आश्चर्य होता है। आखिर प्रशिक्षण का काम करने वाले को भी क्या मिलता है? आर्थिक लाभ तो दूर, कोई धन्यवाद देने भी नहीं आता न। आवश्यकता भी नहीं धन्यवाद की। लेकिन देखता हूं कि कभी-कभी तो बेचारों को कठोर शब्द भी सुनने पड़ते हैं, व्यवस्था करने वाले से कोई भूल हो गई तो जो ठीक काम किया सो तो किया, पर जो भूल हो गई, सावधानी या असावधानी से, जाने या अनजाने, समझी या नासमझी से, भूल हो गई तो विविध प्रकार की आलोचनाएं सुननी। जिसे देखो वही आलोचना करे। ऐसा क्यों हुआ? ऐसा होना चाहिए था न, इनको ये नहीं करना आता, उनको वो नहीं...। सिर नीचा करके सब सुन लेते हैं न।

मुझे अपने धर्म-पिता से एक विरासत मिली कि बड़े कठोर थे वे अनुशासन में, बहुत कठोर; भीतर चाहे जितनी करुणा हो, ऊपर से इतने कठोर कि कोई हीरे की कनी भी क्या कठोर होगी उनके सामने। लेकिन भीतर इतने मृदुल, इतने मृदुल। तो यह कठोरता वाली बात अपने धर्म-पिता से सीखी, और देखता हूं कभी-कभी बहुत कठोर शब्द इस्तेमाल करने पड़ते हैं—अपने धर्म-पुत्रों के प्रति, धर्म-पुत्रियों के प्रति। अरे! ये बेचारे इतनी सेवा करते हैं और बदले में डांट मिलती है, फिर भी सिर झुका कर सहन करते है। कह सकते हैं- क्या पड़ी है? ऐसा गुरु हमारे किस काम का? इतनी कठोरता से बोलता है। छोड़ो इसे, अपना घर-बार देखें न, क्या मिलेगा हमें? काहे इस जंजाल में पड़ें?

अरे! नहीं, ये कितनी सहिष्णुता से काम करते हैं, बदले में कुछ नहीं मिलता न। किसी को कोई आर्थिक लाभ मिले, यह तो बहुत दूर की बात हुई। कोई पद-प्रशंसा का भी लोभी नहीं। न लाभ, न सत्कार, और यह भी सीखते हैं कि कोई सिर झुकाता है तो धर्म को झुकाता है, मुझे थोड़े झुकाता है। सम्मान करता है तो धर्म का करता है, मेरा थोड़े करता है। यह सारा कुछ कैसे हो रहा है? तो जैसे बार-बार कहता हूं— एक बात तो बहुत स्पष्ट है कि अरे! यह संसार... भगवान बुद्ध जैसा व्यक्ति कहता है कि मुझे इसका कोई आदि नहीं दिखाई देता। आदि है ही नहीं तो क्या दिखाई देगा? कितने कल्पों से, अरे! अनगिनत कल्पों से इस संसार का संसरण हो रहा है। न जाने उन कल्पों में इस संसार की धारा में कौन-कौन व्यक्ति कब-कब मिला होगा। कौन-कौन व्यक्ति कब-कब साथ-साथ तपा होगा। कौन-कौन व्यक्ति कब-कब किस पुण्य-कार्य में साथ रहा होगा। कोई किसी सेवा-कार्य में साथ हुआ होगा...। और इस प्रकार की बातें न जाने कितने जन्मों में हुई होंगी। वह सारा संबंध, पुण्य पारमिताओं का साथ-साथ संग्रह करने का जो इतना बड़ा बल है, वह लोगों को खींचता है। केवल धर्म सीख कर ही नहीं रह जाते, केवल कुछ शिविर करके ही नहीं रह जाते, तन-मन-धन से लग जाते हैं कि कैसे यह काम आगे बढ़े।

यह मान लेना कि एक ही शिविर से किसी व्यक्ति को इतना लाभ मिला कि उस लाभ के मारे उसके मन में इतनी करुणा जागी कि अब तो मुझे लोकसेवा में लगना है, यह काम कैसे फैले इसमें लगना है, ऐसा हो भी सकता है। पर मुझे लगता है कि एक जीवन या एक शिविर की बात नहीं है। न जाने कितने जन्मों में इस प्रकार के काम किए हैं। धर्मसेवा के काम किए हैं, पुण्य के काम किए हैं, कुशल काम किए हैं और साथ-साथ काम किए हैं तो वह सारा पुराना संग्रह जागता है और फिर एकजुट हो जाते हैं। आते हैं, साधना करते हैं, जिन-जिन के पास जितनी-जितनी पारमी है, जितना पुण्य-संग्रह है उतनी दृढ़ता के साथ, उतने बल के साथ जुड़ जाते हैं। और काम यूं होते जाता है कि किसी को पता ही नहीं लगता। अरे! इतना बड़ा शिविर आरंभ होने ही जा रहा है कि इतने लोगों की बुकिंग और आ गई। इन सबको कहां रखेंगे? कैसे सब की व्यवस्था होगी? और जब शिविर शुरू हो गया तब पूछते हैं, "हो गई व्यवस्था?"— हां-हां सब हो गई, सबको स्थान मिल गया। इतने लोगों का भोजन तैयार होना है, वह भी समय पर। समय पर ही इतने लोगों की ज़रूरतें पूरी होनी हैं— पानी, बिजली आदि के साथ भिन्न-भिन्न प्रकार की आवश्यकताएं। यह सब कैसे होता है? इसी से मन दृढ़ होता है कि बात ठीक है। अरे! काम तो धर्म करता-कराता है भाई! अब धर्म के जागने का समय आया है।..."

जैसे गुरुजी ने कहा, "अब धर्म के जागने का समय आया है"। भले ही लाखों लोगों को विपश्यना मिल गई हो। विश्व की इतनी बड़ी जनसंख्या को देखते हैं, लोगों के दुःख को देखते-समझते हैं तो साफ मालूम होता है कि इस क्षेत्र में अभी बहुत काम करना बाकी है। विपश्यना की शुद्ध विधि (पटिपत्ति) के साथ-साथ भगवान बुद्ध का शुद्ध उपदेश (परियत्ति) भी आवश्यक है। भारत का बहुत बड़ा दुर्भाग्य था कि उसने अपनी इतनी बड़ी धरोहर को पूर्णतः खो दिया।...

भगवान बुद्ध ने कहीं बुद्धिज्म नहीं सिखाया। उनकी 15,000 पृष्ठों की सारी वाणी भारत ने खो दी। एक पृष्ठ अपने देश में नहीं रहा, दुर्भाग्य की बात हुई न। लेकिन प्रसन्नता की बात है कि पड़ोसी देशों ने इसे संभाल कर रखा।...

परियत्ति के उत्थान के लिए 1985 में 'विपश्यना विशोधन विन्यास' का गठन किया गया और संपूर्ण त्रिपिटक, उसकी अर्थ-कथाओं और टीकाओं सहित बर्मी लिपि से देवनागरी लिपि में बदलकर छपवाया गया। लेकिन ये सारे ग्रंथ पालि भाषा में हैं। अतः एक काम तो उसके अनुवाद का है जिसमें से कुछ-कुछ हो चुका है लेकिन बहुत सारा काम अभी बाकी है। इसको आगे बढ़ाना है तो हमें पालि भाषा के जानकार साधकों/पंडितों की संख्या बढ़ानी होगी।

देखते हैं यहां पर एक छोटी-सी इंस्टिट्यूट बनी है और लोग यहां आकर पालि पढ़ना चाहते हैं। आए तो बेचारे पालि पढ़ने, पर उनको ठीक से स्थान नहीं मिलता। अधिक समय तक आराम से रह नहीं सकते। और पालि पढ़ते हैं तो फिर यह भी आशा की जाती है कि थोड़ी देर पालि पढ़ो, थोड़ी देर तुम्हें सेवा करनी होगी। तुम यहां रहते हो तो कुछ करना ही चाहिए। क्योंकि अभी यहां पर्याप्त सुविधाएं नहीं हैं। जब कभी बड़ा संस्थान बनेगा तो उसमें रह कर 6 महीने क्या, 10 वर्ष पढ़ो कौन मना करेगा? बड़े इंस्टिट्यूट में पालि, संस्कृत, हिंदी सब पढ़ाई जायगी ताकि ये बाहर के जो लोग आएं उनको इन भाषाओं का ज्ञान हो ताकि बुद्ध की बात को गहराई से समझ करके इसको बाहर फैलाने में अपना योगदान दे सकें।

चौथी आवश्यक बात है चिह्न की, इनसे लोगों को जिज्ञासा, आश्वासन और प्रेरणा मिलती है। जो साधना केंद्र बने वे तो चिह्न थे ही, साथ में जो पगोडा बने वे और आकर्षक चिह्न हैं। इनमें सबसे प्रमुख ग्लोबल विपस्सना पगोडा या विश्व विपश्यना पगोडा तो धर्म का प्रतीक ही है। यहां केवल धर्म-साधना संबंधी कार्यकलाप ही होते हैं, अन्य कोई कर्मकांड बिल्कुल नहीं।

"पगोडा इसलिए नहीं बनना चाहिए कि उससे कोई संप्रदाय स्थापित हो। धर्म साधना के लिए ही पगोडा हो। दुर्भाग्य से पिछले 2000 वर्षों में इस देश ने बुद्ध के जीवन के बारे में जो सच्चाइयां हैं उन्हें भुला दिया। और भुलाया ही नहीं, बल्कि और भी बहुत-सी गलत बातें उन पर थोप दी गईं। पिछले 2000 वर्षों से वही बातें सुनते-सुनते लोगों के मन-मानस पर इतना

मोटा लेप लगा हुआ है जिसका एक उदाहरण सामने आया। अभी पिछले दिनों एक एपिसोड चल रहा था। उसको देखने से लगता है कि किस प्रकार लोग अभी तक भ्रमित हुए हैं और उन भ्रम-भ्रांतियों को इस प्रकार के एपिसोड और बढ़ावा देते हैं। प्रश्न उठता है कि कैसे लोगों को सही बात मालूम हो? एक तो यह कि इस प्रकार का बहुत बड़ा 300-350 फीट ऊंचा चैत्य बने तो लोग इसलिए आएंगे कि देखें—यहां क्या है? जिज्ञासा के कारण ही आएंगे। आएंगे उसको देखने के लिए और पाएंगे कि उसमें एक गैलरी है, एक दीर्घा है जिसमें बुद्ध के जीवन की, उनकी शिक्षा की, उनके जीवन की घटनाओं की और ऑडियो-विडियो आदि के द्वारा विपश्यना की महत्ता समझाई गयी है। इस परिसर में चक्कर लगाने पर उनको विपश्यना की कुछ-न-कुछ जानकारी होगी ही। दिन भर में यदि 2000-4000 लोगों ने भी उसे देखा, सुना और उनमें से यदि 5-10 लोगों को भी बात समझ में आई और उनके मन में प्रेरणा जागी—अरे! यह तो बड़ा अच्छा मार्ग है... तो कल्याण हो जायगा न उन सब का! इसी प्रकार धीरे-धीरे देश में सच्ची जानकारी जाग उठेगी—मेडिटेशन के लिए, ध्यान के लिए। इसका बहुत बड़ा प्रयोग होगा यहां, इस माने में।

महाबोधि सोसाइटी ने बड़ी कृपा करके हमें यह आश्वासन दिया कि उनके पास जो भगवान बुद्ध के अस्थि अवशेष हैं जो कि असली हैं, उनमें का कुछ हिस्सा वे हमें देंगे। वह यहां गुंबद के सिरे पर स्थापित होगा। श्रीलंका के प्राइम मिनिस्टर ने भेज भी दिया है कुछ धातु, वह भी होगी। इस प्रकार से जो कुछ भी हमें प्राप्त होगा उन्हें ऊपर रखेंगे। (स्थापित हो चुका है।) और उसके आसपास जो बहुत पुराने साधक हैं, एक समय निश्चित होगा उस समय केवल पुराने साधक उसमें बैठकर ध्यान करेंगे। उसकी जो तरंगें हैं, स्वयं अपने अनुभव से जानता हूं कि कितनी तीव्र तरंगें होती हैं, कितनी कल्याणकारी तरंगें होती हैं। उसके सान्निध्य में ध्यान इतना अच्छा लगता है, उसका लाभ होगा ही। इसके अतिरिक्त इतना बड़ा हाल, (330 feet डायामीटर) जिसमें 8,000 से अधिक लोग एक साथ बैठ कर ध्यान कर सकेंगे।

हमें ऐसा दिखता है कि एक समय ऐसा आएगा- जब 5-5, 10-10 हजार व्यक्ति वहां बैठेंगे, भले आधे घंटे ही उनको आनापान दें, (वे स्वीकार करेंगे तभी उनको देंगे।) उसमें से 10-20-50 व्यक्तियों को भी ठीक से साधना मिल गई तो कितना लाभ हुआ। औरों के मन में यह हुआ कि भाई यह तो बहुत अच्छी विद्या है, वे 10 दिन का शिविर करेंगे। करेंगे तो बहुत अच्छी बात, जीवन में उसका उपयोग करेंगे। उसे किसी प्रकार से भी कर्मकांड का स्थान नहीं बनने देंगे, किसी प्रकार से भी संप्रदाय का केंद्र नहीं बनने देंगे। न कोई यहां पर पुजारी बैठेगा, न कोई पंडा बैठेगा। न कोई पुरोहित बैठेगा, न और कुछ...। जिनको भगवान बुद्ध की शरीर-धातु पर श्रद्धा के सुमन चढ़ाने हैं, नमस्कार करना है उसके लिए कोई अलग स्थान होगा। हाल के अंदर किसी प्रकार का कर्मकांड कदापि नहीं होने देंगे ताकि लोगों को मालूम हो कि ये जो चैत्य बने थे- कभी किसी जमाने में, ये क्यों बने थे? उनका क्या उपयोग होता था? यह भारत के लोगों के लिए आदर्श होगा।...

"सुखा सङ्घस्स सामग्गी" जो संघ होता है—संघ केवल भिक्षुओं का नहीं होता। केवल भिक्षुणियों का नहीं होता। गृहस्थ पुरुषों का, गृहस्थ नारियों का भी संघ होता है। तपस्या करने वालों का संघ एक साथ एकत्र हो जाय तो बहुत सुखदायी होता है, और **"समग्गानं तपो सुखो"** - ये एक साथ एकत्र ही न हों, बल्कि एक साथ एकत्र होकर तपस्या करें, अरे! इस सुख का क्या ठिकाना?"...

इसके अतिरिक्त पगोडा की और भी विशेषताएं होंगी। पगोडा का बाह्य रूप तो लोगों को आकर्षित करने के लिए है, अंदर सचमुच बुद्ध कौन थे? उनके जीवन की घटनाएं, उन्होंने क्या सिखाया? इसके बारे में जो भ्रांतियां हैं उन भ्रांतियों को निकालने के लिए, वे सारी बातें यहां की दर्शक-दीर्घा में दिखायी जायेंगी। आज के वैज्ञानिक ढंग से दिखायी व सुनाई जायेंगी, चलते-फिरते स्वरूपों में दिखायी जायेंगी ताकि लोग ठीक से समझ सकें। ...

केवल बड़ी-बड़ी इमारतें बन जाने से बात नहीं बनेगी। बड़ी इमारत किसलिए बनाते हैं कि जिस व्यक्ति ने इतनी बड़ी खोज की, जो संसार का कोई दूसरा व्यक्ति नहीं कर सका...। 2600 वर्ष पहले इस महान वैज्ञानिक ने खोज की कि सारे विश्व में कहीं ठोसपना नहीं है। There is no solidity in the entire material world or mental world, mere vibration-mere vibration. **"सब्बो पज्जलितो लोको, सब्बो लोको पकम्पितो।"** 2600 वर्ष पहले बिना किसी लैब के, बिना किसी इंस्ट्रूमेंट के समझ लिया—भीतर सच्चाई को देखते-देखते...। आज के वैज्ञानिक भी यह कहने लगे कि कोई ठोसपना नहीं है। बुद्ध ने यह बात ढूंढ़ करके क्या किया? कोई कौतूहल पूरा नहीं किया। यह बात ढूंढ़ करके शरीर की संवेदना देखने लायक बना दिया कि कहीं पर ठोसपना है ही नहीं। भीतर संवेदना चल रही है, कैसी संवेदना चल रही है? उसको जानेंगे, उसको जान करके अपना सुधार करना शुरू कर दिया। अरे! इस व्यक्ति ने इतनी बड़ी विद्या ढूंढ़ निकाली। लोगों का कल्याण किया। हमने दुर्भाग्य से उसे खो दिया। ऐसे व्यक्ति का अवशेष, उसका सम्मान होना चाहिए न..। यह इतना बड़ा पगोडा उनके अवशेषों का सम्मान करने के लिए, बुद्ध का सम्मान करने के लिए बना है। हमारे देश का एक ऐसा महापुरुष हुआ। अरे! विश्व के मानव जाति के इतिहास का एक ऐसा महापुरुष जिसने विश्व के कल्याण के लिए इतनी बड़ी विद्या ढूंढ़ निकाली, उसके अवशेष का हम सम्मान ही नहीं करें! सम्मान करते हैं। हजरत साहब का बाल मस्जिद में रखते हैं, सम्मान करते हैं। बर्मा के लोग भगवान बुद्ध का बाल श्वेडागोन पगोडा में रखते हैं, सम्मान करते हैं। भगवान बुद्ध का दांत लंका में पगोडा में रखते हैं, सम्मान करते हैं। हमें भी होश आए, सम्मान करना सीखें। सम्मान इसलिए करते हैं कि उनसे हमें इतना कुछ प्राप्त हुआ। उनका उपकार मानते हैं। लेकिन असली सम्मान तो वह कि जब हम उनके बताए हुए रास्ते पर चलने लगें। और फिर यहां तो दोनों काम होता है। एक ओर सम्मान हो रहा है उनके अवशेषों का और एक ओर उनके बताए हुए मार्ग पर चलने के लिए एकत्र हो रहे हैं—(यहां धम्मपत्तन विपश्यना केंद्र है, जहां पटिपत्ति सीखते हैं।) अपनी शांति के लिए, औरों की शांति के लिए। अपने भले के लिए, औरों के भले के लिए। अपने मंगल के लिए, औरों के मंगल के लिए। खूब धर्म जागे, खूब धर्म जागे। सबका मंगल हो! सबका कल्याण हो!"

(संकल्प संबंधी तीसरा भाग क्रमशः अगले अंक में)

ooooooooooooooooooooo

पगोडा परिसर के अन्य कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारियां:-

आधुनिक मल्टी-मीडिया म्युजियम—

आचार्य श्री गोयन्का जी की जन्म-शती एवं 'शुद्ध धर्म के २६०० वर्ष' के अवसर पर पगोडा-परिसर में नव-निर्मित एक अत्यंत आधुनिक "मल्टी-मीडिया म्युजियम" का प्रायोगिक उद्घाटन भी किया गया। १८,००० वर्गफुट में यह प्रदर्शनी फैली है।

इसमें भगवान बुद्ध के जीवन, वैराग्य, और संबोधि विषय पर, सम्राट अशोक की धर्म प्रभावना और धर्म के विश्व विस्तार के अनुपम योगदान एवं म्यंमा की गुरु-शिष्य परंपरा के विशेष योगदान पर, और आचार्य गोयन्का जी के प्रेरणादायी जीवन पर, आकर्षक सामग्री प्रदर्शित की गई है।

आचार्य गोयन्का जी की कल्पना के अनुरूप इस मल्टी-मीडिया प्रदर्शनी से 'धर्म क्या है' इसे रोचक और सरल शब्दों में उजागर करने का एक सुंदर प्रयास किया गया है।

शीघ्र ही इसे सभी पर्यटकों के लिए शनिवार, रविवार और छुट्टी के दिनों पर खोल दिया जायगा। आशा है कि इसे देखने के बाद बड़ी संख्या में पर्यटक लघु आनापान सत्र में भाग लेंगे और शुद्ध धर्म के मार्ग पर पहला कदम उठायेंगे।

ooooooooooooooooooooo

ग्लोबल विपश्यना पगोडा, गोराई, मुंबई में

1. एक दिवसीय महाशिविर (Mega Course) कार्यक्रमः

रविवारः 26 मई, 2024 बुद्ध पूर्णिमा, **21 जुलाई,** आषाढ़-पूर्णिमा और **रविवार 29** सितंबर, भाद्रपद-पूर्णिमा एवं पूज्य गुरुजी की पुण्य-तिथि के उपलक्ष्य में **एक दिवसीय** महाशिविर होंगे।

Online registration: *http://oneday.globalpagoda.org/register* **Eail:** *guruji.centenary@globalpagoda.org* or *oneday@globalpagoda.org*

अन्य किसी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्कः
info@globalpagoda.org or *pr@globalpagoda.org*

FORM IV

Statement about ownership and other particulars about newspaper 'Vipashyana' Monthly

Name of the Newsletter	:	Vipashyana
Language	:	Hindi
Frequency of publication	:	Monthly (every Purnima)
Place of publication	:	Vipassana Research Institute, Dhamma Giri, Igatpuri 422 403
Name of the Printer, Publisher and Editor	:	Mr. Ram Pratap Yadav
Nationality	:	Indian
Place of printing	:	Apollo Printing Press, Nashik-422007.
Name of the proprietor	:	Vipassana Research Institute
Registered Office for the trust:		Green House, Second Floor, Green Street, Fort, Mumbai 400 023

I, Ram Pratap Yadav, declare that the above-mentioned information is true to the best of my knowledge.
Dated 20 April 2024.

Ram Pratap Yadav,
Printer, Publisher and Editor

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

केंद्र-आचार्य

1. श्री संतोष कुमार एवं श्रीमती सीमा शर्मा, — 'धम्म छवि', छिंदवाडा, मध्य प्रदेश, विपश्यना केंद्र के लिए केंद्र-आचार्य के रूप में सेवा

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

1. श्रीमती वी. पद्मिनी, तिरुवन्नामलाई, धम्म का प्रसार
2. श्री एम. आर. मुथुसामी, ऐरादे, तामिलनाडु, तमिल में धम्म साहित्य का अनुवाद

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ स. आचार्य

1. डॉ. मेल्वीन चागास, गोवा
2. श्री कान्ताराव एवं श्रीमती रजिनी उप्पला, बैंगलोर
3. Mrs. Swarna Podimenike, Sri Lanka

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्री लक्ष्मण सिंह यादव, जयपुर, राजस्थान
2. श्री प्रसाद वीसमशेट्टी, हैदराबाद, तेलंगाना
3. श्री विजय भास्कर रेड्डी डोड्डा, हैदराबाद, तेलंगाना
4. कु. झरना बरुआ, पश्चिम बंगाल
5. श्री गोंदीमल्ल सत्यनारायण, नालगोंडा, तेलंगाना
6. कु. मनाली सभाया, राजकोट, गुजरात
7. श्री जवाहर पांडे, देवरिया, उत्तर प्रदेश
8. Mr. Kunnitee Putthipongpaiboon, Thailand

क्षेत्रीय संयोजक बाल-शिविर

1. श्री प्रीतम प्रधान, नेपाल (अतिरिक्त उत्तरदायित्व)

बालशिविर शिक्षक

1. श्री देवेंद्र सिंह, मिर्जापुर
2. श्री पवन सिंह, अयोध्या
3. कु. ममता बौद्ध, सीतापुर
4. श्रीमती राजकला पाटिल, वाराणसी
5. कु. मंगलम, लखनऊ
6. श्री लोकेश जगदीश कसेरा, नवी मुंबई
7. श्री अनीश चौधरी, नवी मुंबई
8. श्रीमती दिशा चौधरी, नवी मुंबई
9. श्री अक्षय रविकांत चव्हाण, सातारा
10. श्री अंकुश वायदंडे, सातारा
11. श्री राहुल जाधव, सातारा
12. श्रीमती प्रीती राहुल शहा, सातारा
13. श्री अक्षय रविकांत चव्हाण, सातारा
14. श्री हर्षल बाळकृष्ण कदम, सातारा
15. श्रीमती कविता निळकंठ बागडे, कराड
16. श्री विजयानंद होगाडे, कराड
17. श्री निळकंठ बागडे कराड, कराड
18. श्री अंकुर शर्मा, मुंबई
19. श्रीमती दिनश्री राजभोज, नाशिक
20. Mr. FUNG Chun HO Dennis, Hong Kong,
21. Ms. Wong Mei Ling, Hong Kong,
22. Mr. Kanu Fung, Hong Kong,
23. Ms. Lee Wing Tung, Eva, Hong Kong,
24. Mr. Yiu kwok hung, Hong kong,

दोहे धर्म के

जन-जन के कल्याण हित, स्तूप स्थापना होय।
जागे विश्व विपश्यना, जन-मन मंगल होय॥

पत्थर-पत्थर जोड़ कर, लिया चैत्य चिनवाय।
जिसके नीचे बैठ कर, ध्यान करे सुख पाय॥

इस मंगलमय स्तूप से, धर्म प्रकाशित होय।
जन-जन का हित-सुख सधे, भला विश्व का होय॥

पत्र पुष्प नैवेद्य से, छिछला वंदन होय।
करें विपश्यना साधना, सही वंदना होय॥

दूहा धरम रा

आतै जातै सांस पर, रवै निरंतर ध्यान।
सहज सांस री सजगता, साधन आनापान॥

बारै बारै भटकतो, देख्यो दुखी जहान।
सांस सहारै उतरग्यो, भीतर सुख री खान॥

छोटो जीवन मनुज रो, मिलै न बारंबार।
अपणी सेवा सै करै, परसेवा ब्रत धार॥

समय पक्यो तो आप ही, ऊग्यो धरम विहान।
तूं जाणै तूं ल्यावियो, गरब कर्यो नादान॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6, अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877, मोबा. 09423187301, *Email: morolium_jal@yahoo.co.in*
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2567, चैत्र पूर्णिमा, 23 अप्रैल, 2024, वर्ष 53, अंक 11

वार्षिक शुल्क रु. 100/-, US $ 50 (भारत के बाहर भेजने के लिए) "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.) **(फुटकर बिक्री नहीं होती)**
DATE OF PRINTING: 04 APRIL, 2024, DATE OF PUBLICATION: 23 APRIL, 2024

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244998, 243553, 244076, 244086, 244144, 244440
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org